राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
राजभवन, पटना–800022

ई–मेल–pr.rajbhavan@gmail.com
prrajbhavanbihar@gmail.com
मोबाईल–9431283596

प्रेस–विज्ञप्ति

लोक भाषाओं और विभिन्न भारतीय भाषाओं के शब्द ग्रहण कर हिन्दी और अधिक समद्ध हो रही है–राज्यपाल

पटना, 17 दिसम्बर 2018

''हिन्दी एक समृद्ध भाषा है। इसका साहित्य भी अत्यन्त उत्कृष्ट, विपुल और बहुआयामी है। आज हिन्दी में लोकभाषाओं तथा अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों का भी भरपूर समावेश हो रहा है, जिससे हिन्दी और अधिक समृद्ध होती जा रही है।'' –उक्त उद्‌गार, महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन ने बिहार साहित्य सम्मेलन के 100वें स्थापना–दिवस समारोह को सम्मेलन भवन सभागार में संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

राज्यपाल श्री टंडन ने कहा कि किसी देश का इतिहास, संस्कृति, दर्शन और विचार–वैभव उसकी राष्ट्रभाषा में ही सही तौर पर अभिव्यक्त होता है। उन्होंने कहा कि भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी ही हो सकती है, जिसमें आमजन की वाणी को अभिव्यक्ति मिलती है। राज्यपाल ने कहा कि आज हिन्दी का बहुआयामी विकास हो रहा है। इसमें सिर्फ साहित्य ही नहीं रचा जा रहा है बल्कि ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और न्याय तथा हर विषयों की किताबें इसमें प्रकाशित हो रही हैं। उन्होंने कहा कि आज की हिन्दी साहित्यकारों से कहीं ज्यादा पत्रकारों और अन्य बौद्धिकों द्वारा गढ़ी जा रही है। इसके परिणामस्वरूप हिन्दी का संकुचन नहीं बल्कि विस्तार हो रहा है। हिन्दी आज एक नये रूप में विकसित हो रही है। आज हिन्दी आम लोगों के प्रयोग से समृद्ध हो रही है और एक जनभाषा के रूप में इसका सर्वतोन्मुखी विकास हो रहा है।

राज्यपाल ने कहा कि स्वतंत्रता–आन्दोलन और उसके बाद भी साहित्यकारों ने राष्ट्रीय नवनिर्माण में अपना व्यापक योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि तुलसीदास, कबीरदास, भारतेन्दु, मैथिलीशरण गुप्त, निराला, जयशंकर प्रसाद, पन्त आदि ने तो हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया ही है, बिहार के दिनकर, शिवपूजन सहाय सहित दर्जनों लेखकों की अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति रही है। राज्यपाल ने कहा कि बिहार के आर्यभट्‌ट, कौटिल्य सहित कई हिन्दी और संस्कृत के लेखकों ने साहित्य और ज्ञान की दुनियाँ में बिहार का नाम रोशन किया है। राज्यपाल ने बिहार हिन्दी–साहित्य सम्मेलन के 100 वर्षों के गौरवमय इतिहास का उल्लेख करते हुए कहा कि साहित्य, संगीत और कला के विकास से किसी राष्ट्र का सांस्कृतिक अभ्युदय होता है। राज्यपाल ने 'बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के 100वें स्थापना–दिवस के अवसर पर सभी साहित्यकारों एवं बुद्धिजीवियों को बधाई दी।

राज्यपाल ने कहा कि कम्प्यूटर और तकनीकी विकास के युग में भी हिन्दी का सतत् विकास हो रहा है, चूँकि यह एक वैज्ञानिक भाषा भी है।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के अध्यक्ष डॉ॰ सूर्य प्रसाद दीक्षित ने बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के गौरवमय इतिहास का जिक्र किया। बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री अनिल सुलभ ने संस्था की उपलब्धियों का उल्लेख किया।

कार्यक्रम के दौरान राज्यपाल ने श्री शिववंश पाण्डेय, श्री अर्जुन सिह 'आदित्य', श्री योगेन्द्र मिश्र, पूनम आनंद एवं मनोज कुमार वर्मा आदि की पुस्तकों को लोकार्पित भी किया तथा सुप्रसिद्ध गीतकार सत्यनारायण, समीक्षक डॉ॰ खगेन्द्र ठाकुर, प्रो॰ अमरनाथ सिन्हा, डॉ॰ शिवदास पाण्डेय, श्री महेश्वर ओझा महेश, श्री श्याम जी सहाय, डॉ॰ शालिग्राम सिंह 'अशांत', डॉ॰ श्रीकांत सिंह 'गौतम', डॉ॰ परमेश्वर भक्त, डॉ॰ वसंत नारायण सिंह एवं डॉ॰ दिनेश चन्द्र झा को सम्मानित भी किया। कार्यक्रम में सेवानिवृत्त जस्टिस श्री राजेन्द्र प्रसाद, डॉ॰ शशिशेखर तिवारी आदि भी उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन सम्मेलन के महामंत्री डॉ॰ शिववंश पाण्डेय ने किया जबकि संचालन डॉ॰ शंकर प्रसाद ने किया।

.....